

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **SEPTEMBER 21, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

1. भारत में बौद्ध और जैन वास्तुकला के विकास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एलोरा इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके जीवित स्मारक एक ही स्थल पर बौद्ध, हिंदू और जैन स्थापत्य परंपराओं के सह-अस्तित्व को प्रदर्शित करते हैं।
2. नागपट्टिनम आंशिक रूप से श्रीलंका के साथ अपने समुद्री संपर्कों के कारण एक महत्वपूर्ण बौद्ध केंद्र के रूप में उभरा, और चोल-काल के बौद्ध कांस्य भी इस स्थल से जुड़े रहे हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं? (a) केवल 1 (b) केवल 2 (c) न तो 1 और न ही 2 (d) 1 और 2 दोनों

उत्तर: (d) 1 और 2 दोनों

व्याख्या:

दोनों कथन सही हैं। एलोरा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि बौद्ध, हिंदू और जैन स्मारक एक ही स्मारकीय परिदृश्य के भीतर पाए जाते हैं, जो विभिन्न धार्मिक परंपराओं के सह-अस्तित्व और अंतःक्रिया का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। नागपट्टिनम एक महत्वपूर्ण बौद्ध केंद्र था, जहां इसके स्थान और समुद्री संबंधों ने इसके महत्व में योगदान दिया। इस स्थल ने चोल कलात्मक परंपरा में बौद्ध कांस्य की मूर्तियां भी प्रदान की हैं। महत्वपूर्ण जाल यह मानना है कि चोल कांस्य की उपस्थिति नागपट्टिनम को अनिवार्य रूप से विशेष रूप से एक हिंदू/चोल धार्मिक केंद्र बनाती है; इसके बौद्ध संबंध भी काफी मजबूत थे।

2. एक देश अनुसंधान और विकास, विशेष डेटा व्याख्या और बौद्धिक संपदा अनुसंधान सहित ज्ञान-गहन गतिविधियों के तीव्र विस्तार का अनुभव करता है, जबकि नियमित ग्राहक-सहायता कार्य का एक बड़ा हिस्सा विदेशों में बाहरी एजेंसियों को स्थानांतरित कर दिया जाता है। निम्नलिखित में से कौन-सा इस संयोजन द्वारा चित्रित भौगोलिक-आर्थिक प्रक्रिया को सर्वोत्तम रूप से दर्शाता है?

- (a) प्राथमिक गतिविधियों का लंबवत एकीकरण
- (b) आउटसोर्सिंग और ज्ञान-आधारित विशेषज्ञता के माध्यम से श्रम का स्थानिक विभाजन
- (c) मुख्य रूप से घटते अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण विऔद्योगीकरण
- (d) चतुर्थक गतिविधियों द्वारा तृतीयक गतिविधियों का प्रतिस्थापन

उत्तर: (b) आउटसोर्सिंग और ज्ञान-आधारित विशेषज्ञता के माध्यम से श्रम का स्थानिक विभाजन

व्याख्या:

यह स्थिति चतुर्थक गतिविधियों के विकास के साथ आउटसोर्सिंग/ऑफ-शोरिंग को जोड़ती है। एनसीईआरटी (NCERT) चतुर्थक गतिविधियों को उनके ज्ञान उन्मुखीकरण से अलग करता है, जिसमें अनुसंधान, विकास और सूचना-गहन कार्य शामिल हैं। आउटसोर्सिंग में किसी बाहरी एजेंसी को काम का ठेका देना शामिल है, जबकि ऑफ-शोरिंग विशेष रूप से ऐसे काम को विदेशों में स्थानांतरित करने को संदर्भित करता है। इसलिए दो प्रक्रियाएं परस्पर अनन्य विकल्पों का प्रतिनिधित्व करने के बजाय एक साथ काम कर सकती हैं।

3. एक खुली अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. आयात में वृद्धि, अन्य बातें अपरिवर्तित रहने पर, आय के घरेलू चक्रीय प्रवाह से एक रिसाव (लीकेज) का निर्माण करती है।
2. निर्यात में वृद्धि, अन्य बातें अपरिवर्तित रहने पर, घरेलू समग्र मांग में एक अंतःक्षेप (इन्जेक्शन) का निर्माण करती है।
3. आयात की सीमांत प्रवृत्ति में वृद्धि से खुली अर्थव्यवस्था व्यय गुणक में अनिवार्य रूप से वृद्धि होती है क्योंकि अतिरिक्त आय का एक बड़ा हिस्सा विदेशी मांग में परिवर्तित हो जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या:

कथन 1 और 2 सही हैं। आयात एक रिसाव (लीकेज) का प्रतिनिधित्व करते हैं क्योंकि व्यय घरेलू अर्थव्यवस्था के बाहर उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की ओर निर्देशित होता है। निर्यात एक अंतःक्षेप (इन्जेक्शन) का गठन करते हैं क्योंकि विदेशी व्यय घरेलू रूप से उत्पादित उत्पादन की मांग पैदा करता है।

कथन 3 गलत है। आयात की उच्च सीमांत प्रवृत्ति घरेलू चक्रीय प्रवाह से एक अतिरिक्त रिसाव का प्रतिनिधित्व करती है और इसलिए खुली अर्थव्यवस्था गुणक को बढ़ाने के बजाय कम करती है। यह एक क्लासिक यूपीएससी (UPSC) जाल है: उम्मीदवार को विदेशी मांग पर प्रभाव और घरेलू आय प्रसार पर प्रभाव के बीच अंतर करना चाहिए। एनसीईआरटी (NCERT) का अध्याय 6 स्पष्ट रूप से एक खुली अर्थव्यवस्था में आयात को रिसाव और निर्यात को अंतःक्षेप के रूप में मानता है।

4. भारत में आपातकाल से जुड़ी राजनीतिक घटनाओं के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. जून 1975 में घोषित आपातकाल उस समय मौजूद "आंतरिक अशांति" के संवैधानिक आधार पर आधारित था।
2. कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच संघर्ष आपातकाल से पहले के संस्थागत तनावों में से एक था।
3. आपातकाल 1977 के लोकसभा चुनावों के बाद कांग्रेस सरकार की बहाली के साथ समाप्त हुआ।
4. 1974-75 के राजनीतिक विकास में संगठित विरोध आंदोलन और सरकारी प्राधिकरण तथा लोकतांत्रिक संस्थानों के बीच संतुलन से संबंधित व्यापक बहस दोनों शामिल थीं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) केवल तीन (d) सभी चार

उत्तर: (c) केवल तीन

व्याख्या:

कथन 1, 2 और 4 सही हैं।

- **कथन 1:** सही। जून 1975 के आपातकाल की घोषणा संवैधानिक प्रावधान के तहत की गई थी, जो तब "आंतरिक अशांति" से खतरे का हवाला देती थी।

- **कथन 2:** सही। सरकार और न्यायपालिका के बीच तनाव ने राजनीतिक पृष्ठभूमि का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया।
- **कथन 3:** गलत। 1977 के लोकसभा चुनावों के परिणामस्वरूप संघ स्तर पर कांग्रेस की हार हुई और जनता पार्टी की सरकार बनी।
- **कथन 4:** सही। इस अवधि में गुजरात और बिहार में आंदोलनों के साथ-साथ व्यापक संस्थागत और संवैधानिक विवाद भी देखने को मिले।

मुख्य जाल कथन 3 में कालानुक्रमिक उलटफेर है: आपातकाल 1977 में समाप्त हुआ, लेकिन राजनीतिक परिणाम कांग्रेस सरकार की बहाली नहीं थी; बल्कि, कांग्रेस चुनाव हार गई।

5. निम्नलिखित कथन (A) और कारणों (R) पर विचार कीजिए:

कथन (A): एक आबादी में विकासवादी परिवर्तन हो सकता है, भले ही एक विशेष पीढ़ी के दौरान आबादी में कोई नया उत्परिवर्तन (म्यूटेशन) न हो। **कारण (R1):** जीन प्रवाह (जीन फ्लो) व्यक्तियों या युग्मकों (गेमेट्स) की गतिशीलता के माध्यम से आबादी में पहले से मौजूद एलील की आवृत्तियों को बदल सकता है। **कारण (R2):** जेनेटिक ड्रिफ्ट (आनुवंशिक विचलन) यादृच्छिक नमूनाकरण प्रभावों के माध्यम से एलील आवृत्तियों को बदल सकता है, विशेष रूप से तब जब आबादी का आकार छोटा हो।

निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?

- (a) R1 और R2 दोनों सही हैं, और दोनों कथन (A) की व्याख्या करते हैं
- (b) R1 और R2 दोनों सही हैं, लेकिन केवल R1 कथन (A) की व्याख्या करता है
- (c) R1 और R2 दोनों सही हैं, लेकिन केवल R2 कथन (A) की व्याख्या करता है
- (d) R1 सही है, लेकिन R2 गलत है

उत्तर: (a) R1 और R2 दोनों सही हैं, और दोनों कथन (A) की व्याख्या करते हैं

व्याख्या:

दोनों कारण कथन (A) की सही व्याख्या करते हैं। आबादी के स्तर पर विकास पीढ़ियों के दौरान एलील आवृत्तियों में परिवर्तनों में परिलक्षित होता है; इसके लिए प्रत्येक पीढ़ी के दौरान एक नया उत्परिवर्तन उत्पन्न होने की आवश्यकता नहीं होती है। विकासवादी बलों द्वारा मौजूदा आनुवंशिक भिन्नता को पुनर्वितरित या परिवर्तित किया जा सकता है।

- **R1 सही है:** जीन प्रवाह व्यक्तियों या युग्मकों के प्रवास के माध्यम से एलील का परिचय देता है या हटाता है और इसके परिणामस्वरूप एलील आवृत्तियों को बदल सकता है।
- **R2 सही है:** जेनेटिक ड्रिफ्ट नमूनाकरण प्रभावों के कारण एलील आवृत्तियों में यादृच्छिक परिवर्तन उत्पन्न करता है। इसका प्रभाव विशेष रूप से छोटी आबादी में स्पष्ट हो सकता है।

गहरा वैचारिक जाल उत्परिवर्तन को विकासवादी परिवर्तन के एकमात्र संभावित स्रोत के रूप में मानना है। उत्परिवर्तन नई भिन्नता उत्पन्न करता है, लेकिन एक बार भिन्नता मौजूद हो जाने के बाद, जीन प्रवाह, आनुवंशिक विचलन और प्राकृतिक चयन जैसी प्रक्रियाएं इसकी आवृत्ति को बदल सकती हैं। हार्डी-वेनबर्ग संतुलन, इसके विपरीत, तब विकासवादी परिवर्तन की अनुपस्थिति का प्रतिनिधित्व करता है जब इसकी प्रतिबंधात्मक शर्तें पूरी होती हैं। कक्षा 12 जीवविज्ञान अध्याय 6 हार्डी-वेनबर्ग संतुलन को विकास के व्यापक तंत्र के भीतर रखता है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

Q1. एशियाई-प्रशांत डाक संघ (APPU) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. APPU एक क्षेत्रीय डाक संघ है जो सार्वभौमिक डाक संघ (UPU) के ढांचे के भीतर एक सीमित संघ के रूप में कार्य करता है।
2. यद्यपि APPU की उत्पत्ति एशियाई-ओशियानिक डाक संघ की पहल के माध्यम से हुई थी, इसका वर्तमान मुख्यालय बैंकॉक में है, और इसके सदस्यों में भारत के साथ-साथ एशिया और प्रशांत दोनों क्षेत्रों के देश शामिल हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) न तो एक और न ही दो (d) एक और दो दोनों

उत्तर: (d) एक और दो दोनों

व्याख्या: दोनों कथन सही हैं।

- **कथन 1 सही है:** APPU, UPU के सीमित संघों में से एक है। ऐसे संघ UPU के व्यापक अंतर्राष्ट्रीय डाक ढांचे के भीतर काम करते हुए डाक सेवाओं में क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देते हैं। महत्वपूर्ण रूप से, सीमित संघ क्षेत्रीय व्यवस्थाएं तैयार कर सकते हैं, लेकिन वे व्यवस्थाएं लागू UPU ढांचे की तुलना में डाक उपयोगकर्ताओं को कम अनुकूल स्थितियां प्रदान नहीं कर सकती हैं।
- **कथन 2 सही है:** APPU की उत्पत्ति 1961 की मनीला प्रक्रिया के बाद एशियाई-ओशियानिक डाक संघ (AOPU) के रूप में हुई थी, जबकि वर्तमान APPU का मुख्यालय बैंकॉक, थाईलैंड में है। एशियाई और प्रशांत क्षेत्रों में फैले देशों के साथ-साथ भारत भी इसके सदस्यों में शामिल है।

प्रारंभिक परीक्षा का जाल (Prelims Trap): APPU को संयुक्त राष्ट्र की एक स्वतंत्र विशेष एजेंसी समझकर भ्रमित नहीं होना चाहिए। UPU डाक मामलों से संबंधित संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसी है; APPU, UPU ढांचे से जुड़ा एक क्षेत्रीय/सीमित संघ है।

Q2. एक उपभोक्ता उत्पाद में निकोटिन युक्त एक छोटा पारगम्य पाउच होता है, जिसे मसूड़े और ऊपरी होंठ के बीच रखा जाता है, जिससे दहन, धुएं या एरोसोल के उत्पादन के बिना मौखिक म्यूकोसा के माध्यम से निकोटिन अवशोषित हो जाता है। निम्नलिखित में से कौन-सा उत्पाद की सबसे उपयुक्त पहचान है?

- (a) निकोटिन पाउच
- (b) इलेक्ट्रॉनिक निकोटिन-डिलीवरी सिस्टम
- (c) हीटेड टोबैको प्रोडक्ट

(d) पारंपरिक धुआं रहित तंबाकू उत्पाद

उत्तर: (a) निकोटिन पाउच

व्याख्या: निकोटिन पाउच एक तंबाकू-मुक्त मौखिक उत्पाद है जिसमें निकोटिन को मौखिक म्यूकोसा के माध्यम से पहुंचाया जाता है। इसमें दहन या इलेक्ट्रॉनिक हीटिंग की आवश्यकता नहीं होती है और इसलिए यह सिगरेट या इलेक्ट्रॉनिक निकोटिन-डिलीवरी सिस्टम के विशिष्ट तरीके से धुआं या एरोसोल उत्पन्न नहीं करता है।

महत्वपूर्ण वैचारिक अंतर निकोटिन वितरण और उस रूप के बीच है जिसमें निकोटिन वितरित किया जाता है। कोई उत्पाद इलेक्ट्रॉनिक निकोटिन-डिलीवरी सिस्टम हुए बिना भी निकोटिन युक्त हो सकता है।

सितंबर 2026 के समसामयिक मामलों की चर्चा में भारत में निकोटिन पाउच की बढ़ती उपलब्धता और उनकी तंबाकू-मुक्त संरचना से उत्पन्न होने वाले नियामक प्रश्नों पर प्रकाश डाला गया।

Q3. यूनेस्को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता पुरस्कार 2026 के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 2026 का संस्करण "लोगों, ग्रह और समृद्धि के लिए साक्षरता" विषय से जुड़ा था।
2. यूनेस्को किंग सेजोंग साक्षरता पुरस्कार मुख्य रूप से मातृभाषा और बहुभाषी साक्षरता को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों को मान्यता देता है।
3. यूनेस्को कन्फ्यूशियस साक्षरता पुरस्कार पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के भीतर लागू किए जाने वाले कार्यक्रमों तक ही सीमित है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या: कथन 1 और 2 सही हैं, जबकि कथन 3 गलत है।

- **कथन 1 सही है:** 2026 यूनेस्को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता पुरस्कारों का विषय "लोगों, ग्रह और समृद्धि के लिए साक्षरता" था। 2026 के समारोह ने अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस की 60वीं वर्षगांठ भी चिह्नित की।
- **कथन 2 सही है:** कोरिया गणराज्य द्वारा समर्थित यूनेस्को किंग सेजोंग साक्षरता पुरस्कार, विशेष रूप से मातृभाषा और बहुभाषी साक्षरता से जुड़े प्रयासों को मान्यता देता है।
- **कथन 3 गलत है:** यूनेस्को कन्फ्यूशियस साक्षरता पुरस्कार भौगोलिक रूप से पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया तक सीमित नहीं है। यह तकनीक के माध्यम से विशेष रूप से ग्रामीण आबादी और स्कूल से बाहर के युवाओं के बीच कार्यात्मक साक्षरता का समर्थन करने वाले कार्यक्रमों को मान्यता देता है।

2026 के पुरस्कारों में कुल छह पुरस्कार शामिल थे - तीन किंग सेजोंग पुरस्कार और तीन कन्फ्यूशियस पुरस्कार। प्रत्येक विजेता को एक पदक, डिप्लोमा और 30,000 अमेरिकी डॉलर प्राप्त होते हैं।

Q4. बोमा-बाडिंगिलो प्रवासी परिदृश्य के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह दक्षिण सूडान में स्थित है और इसमें बोमा राष्ट्रीय उद्यान और बाडिंगिलो राष्ट्रीय उद्यान शामिल हैं।

2. इसका पारिस्थितिक महत्व बाढ़ के मैदानों, आर्द्रभूमियों और सवाना आवासों में खुरवाले जानवरों (अनगुलेट्स) के बड़े पैमाने पर मौसमी आवागमन से जुड़ा है।
3. यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में इसका नामांकन विशेष रूप से मानदंड (x) के तहत इसके जैव विविधता मूल्य पर आधारित था।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या: कथन 1 और 2 सही हैं, जबकि कथन 3 गलत है।

- **कथन 1 सही है:** बोमा-बाडिंगिलो प्रवासी परिदृश्य दक्षिण सूडान में है और इसमें बोमा राष्ट्रीय उद्यान, बाडिंगिलो राष्ट्रीय उद्यान और उन्हें जोड़ने वाला व्यापक परिदृश्य शामिल है।
- **कथन 2 सही है:** यह परिदृश्य दुनिया के सबसे बड़े शेष स्थलीय स्तनपायी प्रवासों में से एक का समर्थन करता है। मौसमी वर्षा, बाढ़, वनस्पति उत्पादकता और संसाधनों की उपलब्धता प्रवासी खुरवाले जानवरों के बड़े पैमाने पर आवागमन को संचालित करती है।
- **कथन 3 गलत है:** इस संपत्ति को तीन मानदंडों के तहत नामांकित किया गया था: (vii), (ix) और (x)। इस प्रकार, इसका महत्व मानदंड (x) के तहत केवल जैव विविधता/प्रजाति संरक्षण से परे असाधारण प्राकृतिक घटना और चल रही पारिस्थितिक एवं जैविक प्रक्रियाओं तक फैला हुआ है।

एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण समसामयिक तथ्य यह है कि यह परिदृश्य 2026 में दक्षिण सूडान का पहला यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल बन गया।

वैचारिक जाल (Conceptual Trap): प्रश्न जानबूझकर मानदंड (vii) - असाधारण प्राकृतिक घटनाएं, मानदंड (ix) - चल रही पारिस्थितिक/जैविक प्रक्रियाएं, और मानदंड (x) - जैव विविधता और संकटग्रस्त प्रजातियों के बीच अंतर करता है। इसलिए सभी प्राकृतिक विश्व धरोहर नामांकनों को केवल "जैव विविधता स्थल" मानना गलत है।

Q5. एशियाई-प्रशांत डाक संघ (APPU), यूनेस्को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता पुरस्कार और बोमा-बाडिंगिलो प्रवासी परिदृश्य के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. APPU, UPU से जुड़ा एक सीमित संघ है, जबकि यूनेस्को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता पुरस्कार यूनेस्को के संस्थागत ढांचे के तहत दिए जाते हैं।
2. बोमा-बाडिंगिलो प्रवासी परिदृश्य एक सांस्कृतिक विश्व धरोहर संपत्ति है क्योंकि इसका मुख्य महत्व स्थानीय समुदायों की पारंपरिक भूमि-उपयोग प्रथाओं से प्राप्त होता है।
3. यूनेस्को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता पुरस्कारों में यूनेस्को किंग सेजोंग साक्षरता पुरस्कार और साक्षरता के लिए यूनेस्को कन्स्यूशियस पुरस्कार शामिल हैं।
4. APPU का मुख्यालय बैंकॉक में स्थित है, जबकि अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता पुरस्कारों से जुड़ा 2026 का वैश्विक समारोह चियापास, मैक्सिको में आयोजित किया गया था।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) केवल तीन (d) सभी चार

उत्तर: (c) केवल तीन

व्याख्या: कथन 1, 3 और 4 सही हैं, जबकि कथन 2 गलत है।

- **कथन 1 सही है:** APPU, UPU ढांचे के भीतर एक सीमित/क्षेत्रीय डाक संघ है, जबकि अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता पुरस्कार यूनेस्को के पुरस्कार हैं।
- **कथन 2 गलत है:** बोमा-बाडिंगिलो एक प्राकृतिक विश्व धरोहर संपत्ति है, सांस्कृतिक संपत्ति नहीं। इसे प्राकृतिक मानदंडों (vii), (ix) और (x) के तहत नामांकित किया गया था। इसके महत्व में बड़े पैमाने पर वन्यजीव प्रवास, पारिस्थितिक प्रक्रियाएं और जैव विविधता शामिल हैं।
- **कथन 3 सही है:** यूनेस्को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता पुरस्कारों में किंग सेजोंग साक्षरता पुरस्कार और कन्ययूशियस साक्षरता पुरस्कार शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक पुरस्कार से तीन-तीन सम्मान जुड़े हैं।
- **कथन 4 सही है:** APPU ब्यूरो का मुख्यालय बैंकॉक, थाईलैंड में है, जबकि 2026 अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस वैश्विक समारोह और पुरस्कार समारोह 8-9 सितंबर 2026 को चियापास, मैक्सिको में आयोजित किया गया था।

यूपीएससी जाल (UPSC Trap): प्रश्न में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, यूनेस्को विरासत वर्गीकरण और भौगोलिक स्थानों को मिलाया गया है। मुख्य बात यह है कि यूनेस्को से जुड़े हर समसामयिक मामले को विश्व धरोहर सम्मेलन से न जोड़ा जाए; साक्षरता पुरस्कार पूरी तरह से एक अलग यूनेस्को कार्यक्रम हैं।

Q6. अनाक क्राकाटोआ पर्वत के स्थान द्वारा दर्शाए गए मानचित्र के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

- (a) यह जावा और सुमात्रा के बीच सुंडा जलडमरूमध्य में स्थित है।
- (b) यह सुमात्रा और मलय प्रायद्वीप के बीच मलक्का जलडमरूमध्य में स्थित है।
- (c) यह बाली और लोम्बोक के बीच लोम्बोक जलडमरूमध्य में स्थित है।
- (d) यह बोर्नियो और सुलावेसी के बीच मकासर जलडमरूमध्य में स्थित है।

उत्तर: (a) यह जावा और सुमात्रा के बीच सुंडा जलडमरूमध्य में स्थित है।

व्याख्या: अनाक क्राकाटोआ पर्वत सुंडा जलडमरूमध्य में स्थित है, जो इंडोनेशिया में जावा और सुमात्रा को अलग करने वाला रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण जलमार्ग है।

यह ज्वालामुखीय अवशेष है जो पूर्व क्राकाटोआ/क्राकाटाऊ ज्वालामुखीय प्रणाली से जुड़े क्षेत्र में उभरा था। यह क्षेत्र टेक्टोनिक रूप से सक्रिय इंडोनेशियाई ज्वालामुखीय बेल्ट के भीतर स्थित है, जहां इंडो-ऑस्ट्रेलियन प्लेट सुंडा प्लेट के साथ अंतःक्रिया करती है।

मानचित्रण के लिए यह स्थान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि सुंडा जलडमरूमध्य, मलक्का जलडमरूमध्य या लोम्बोक जलडमरूमध्य के समान नहीं है। अनाक क्राकाटोआ का 2018 का विस्फोट/धसना सुंडा जलडमरूमध्य के आसपास के तटीय क्षेत्रों को प्रभावित करने वाली विनाशकारी सुनामी से जुड़ा था।

मानचित्र निष्कासन (Map Elimination):

- सुंडा जलडमरूमध्य → जावा-सुमात्रा → अनाक क्राकाटोआ
- लोम्बोक जलडमरूमध्य → बाली-लोम्बोक
- मलक्का जलडमरूमध्य → सुमात्रा-मलय प्रायद्वीप

- मकासर जलडमरूमध्य → बोर्नियो-सुलावेसी

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

जीएस पेपर I - समाज

Q1. "वैश्वीकरण ने केवल पारंपरिक सामाजिक संस्थानों को कमजोर नहीं किया है; बल्कि, इसने उस तरीके को बदल दिया है जिससे ये संस्थान प्राधिकरण का पुनरुत्पादन, बातचीत और प्रयोग करते हैं।" भारतीय परिवार, जाति और नातेदारी प्रणालियों के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

नमूना उत्तर वैश्वीकरण से तात्पर्य पूंजी, प्रौद्योगिकी, सूचना, वस्तुओं, सेवाओं, विचारों और लोगों के सीमा पार प्रवाह के सुदृढीकरण से है। भारत में इसके सामाजिक परिणाम असमान रहे हैं। पारंपरिक संस्थाओं को केवल नष्ट करने के बजाय, वैश्वीकरण ने संस्थागत अनुकूलन की प्रक्रिया उत्पन्न की है, जिससे परिवार, जाति और नातेदारी संरचनाओं ने नए रूप और कार्य प्राप्त कर लिए हैं।

1. परिवार का रूपांतरण वैश्वीकरण ने निम्नलिखित में योगदान दिया है:

- विशेष रूप से शहरी और गतिशील पेशेवर परिवारों में एकल परिवारों (न्यूक्लियराइजेशन) का प्रसार।
- औपचारिक रोजगार और वैश्विक श्रम बाजारों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी।
- प्रवासन के कारण माता-पिता और बच्चों के बीच अधिक भौगोलिक दूरी।
- दोहरे कमाने वाले परिवारों (डुअल-अर्नर हाउसहोल्ड्स) का विस्तार।
- विवाह और जीवन शैली में व्यक्तिगत पसंद की बढ़ती स्वीकृति।

हालांकि, इसका परिणाम अनिवार्य रूप से विस्तारित (संयुक्त) परिवार का गायब होना नहीं रहा है। डिजिटल संचार, प्रेषण (रेमिटेंस) और आवधिक प्रवासन ने "पारराष्ट्रीय या बिखरे हुए परिवारों" को भौगोलिक पृथक्करण के बावजूद भावनात्मक और आर्थिक संबंधों को बनाए रखने में सक्षम बनाया है। इस प्रकार, परिवार एक मुख्य रूप से सह-आवासीय संस्था से एक अधिक नेटवर्क वाली संस्था की ओर स्थानांतरित हो गया है।

2. जाति का रूपांतरण वैश्वीकरण ने जाति पर विरोधाभासी प्रभाव उत्पन्न किए हैं। एक तरफ:

- शहरी श्रम बाजार जाति-आधारित व्यावसायिक विभाजनों के महत्व को कमजोर कर सकते हैं।
- पेशेवर शिक्षा और प्रवासन सामाजिक गतिशीलता के अवसर प्रदान करते हैं।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म पारंपरिक जाति सीमाओं से परे बातचीत का निर्माण कर सकते हैं।

दूसरी तरफ:

- जाति नेटवर्क रोजगार, विवाह और राजनीतिक लामबंदी को प्रभावित करते रहते हैं।
- प्रवासी समुदाय भारत के बाहर जातिगत पहचान को पुनर्जीवित कर सकते हैं।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म जाति-आधारित एकजुटता और बहिष्कार दोनों को बढ़ावा दे सकते हैं।

इस प्रकार, जाति केवल एक स्थानीय सामाजिक पदानुक्रम होने से बढ़कर तेजी से एक नेटवर्क वाली पहचान बन गई है।

3. नातेदारी का रूपांतरण प्रवासन ने रिश्तेदारों के बीच दैनिक बातचीत को कमजोर कर दिया है, लेकिन साथ ही नातेदारी नेटवर्क की भौगोलिक पहुंच का विस्तार भी किया है। उदाहरण के लिए, विदेशी प्रवासन उत्पन्न कर सकता है:

- प्रेषण-आधारित आर्थिक संबंध;
- पारराष्ट्रीय विवाह;
- प्रवासी नेटवर्क;
- नातेदारी संबंधों का डिजिटल रखरखाव।

महत्वपूर्ण पहलू वैश्वीकरण संबंधों का व्यवसायीकरण, उपभोक्तावादी आकांक्षाएं, अंतर-पीढ़ीगत तनाव और शिक्षा, प्रौद्योगिकी तथा गतिशीलता तक पहुंच के आधार पर नई असमानताएं भी उत्पन्न करता है।

इसलिए, उपयुक्त निष्कर्ष यह नहीं है कि वैश्वीकरण केवल पारंपरिक संस्थाओं को आधुनिक संस्थाओं से बदल देता है। इसके बजाय, यह संकर (हाइब्रिड) संस्थागत रूप बनाता है जिसमें पारंपरिक पहचान आधुनिक आर्थिक, तकनीकी और सांस्कृतिक प्रथाओं के साथ सह-अस्तित्व में रहती हैं।

आगे का रास्ता भारत को निम्नलिखित को संयोजित करने की आवश्यकता है:

- गतिशील परिवारों के लिए सामाजिक सुरक्षा,
- लिंग-संवेदनशील श्रम नीतियां,
- जातिगत भेदभाव के खिलाफ सुरक्षा,
- किफायती शहरी आवास,
- डिजिटल समावेश,
- अपने बच्चों से दूर रहने वाले बुजुर्गों के लिए सहायता प्रणाली।

निष्कर्ष: इसलिए वैश्वीकरण ने भारतीय सामाजिक संस्थाओं के सीधे क्षरण के बजाय उनका पुनर्गठन किया है। उनका अस्तित्व अपनी एकीकृत भूमिकाओं को बनाए रखते हुए गतिशीलता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और तकनीकी जुड़ाव के अनुकूल ढलने की उनकी क्षमता पर निर्भर करता है।

जीएस पेपर II - शासन (गवर्नेंस)

Q2. "सुशासन केवल कुशल प्रशासन का प्रश्न नहीं है; इसके लिए पारदर्शिता, जवाबदेही, भागीदारी और उत्तरदायित्व के संस्थागीकरण की आवश्यकता होती है।" चर्चा कीजिए। भारत में इन सिद्धांतों को स्वचालित रूप से बेहतर शासन परिणामों में अनुवादित होने से क्या रोकता है?

नमूना उत्तर शासन उन प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है जिनके माध्यम से सार्वजनिक निर्णय तैयार, कार्यान्वित और मूल्यांकन किए जाते हैं। सरकार मुख्य रूप से राज्य के औपचारिक संस्थानों को दर्शाती है, जबकि शासन में राज्य, नागरिकों, नागरिक समाज, बाजारों और अन्य हितधारकों के बीच अंतःक्रियाएं शामिल होती हैं।

एनसीईआरटी का लोकतांत्रिक संस्थानों का विवरण इस बात पर जोर देता है कि राजनीतिक अधिकार का प्रयोग संस्थानों के माध्यम से किया जाता है और सार्वजनिक शक्ति को नागरिकों के प्रति जवाबदेह रहना चाहिए। यह केवल प्रशासनिक दक्षता से परे शासन को समझने की नींव प्रदान करता है।

सुशासन के स्तंभ

- 1. पारदर्शिता** नागरिकों के पास सरकारी निर्णयों, व्यय और कार्यान्वयन से संबंधित जानकारी तक पहुंच होनी चाहिए। सूचना का अधिकार ढांचा, सामाजिक अंकेक्षण (सोशल ऑडिट) और स्वतः संज्ञान से प्रकटीकरण जैसे साधन इस पहलू को मजबूत करते हैं।
- 2. जवाबदेही** अधिकारियों और संस्थानों को निर्णयों और परिणामों के लिए जवाबदेह होना चाहिए। विधायी जांच, न्यायिक समीक्षा, लेखा परीक्षा संस्थान, सतर्कता तंत्र और नागरिक शिकायत प्रणालियां जवाबदेही में योगदान करती हैं।
- 3. भागीदारी** लोकतांत्रिक शासन को आवधिक चुनावों तक सीमित नहीं किया जा सकता। ग्राम सभाएं, शहरी स्थानीय निकाय, परामर्श और सहभागी योजना नागरिकों को सार्वजनिक निर्णयों को प्रभावित करने के अवसर प्रदान करते हैं।
- 4. उत्तरदायित्व (रिस्पॉन्सिवनेस)** एक शासन प्रणाली को बदलती सामाजिक जरूरतों का जवाब देना चाहिए। डिजिटल शिकायत प्लेटफॉर्म और प्रत्यक्ष-लाभ (डीबीटी) तंत्र लेनदेन लागत को कम कर सकते हैं और सेवा वितरण में सुधार कर सकते हैं।
- 5. समावेशिता** शासन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वंचित समूहों को केवल भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक या तकनीकी बाधाओं के कारण सार्वजनिक सेवाओं से बाहर न रखा जाए।

ये सिद्धांत स्वचालित रूप से बेहतर परिणाम क्यों नहीं देते?

- संस्थागत विखंडन:** कई विभाग परस्पर जुड़े उद्देश्यों का पीछा कर सकते हैं, जिससे समन्वय विफलताएं पैदा होती हैं।
- क्षमता की बाधाएं:** कर्मियों, कौशल, डेटा या स्थानीय प्रशासनिक क्षमता की कमी के कारण नीतियां अच्छी तरह से डिज़ाइन की जा सकने के बावजूद खराब ढंग से लागू हो सकती हैं।
- डिजिटल विभाजन:** ई-गवर्नेंस डिजिटल रूप से जुड़े नागरिकों के लिए पहुंच में सुधार कर सकता है, जबकि स्मार्टफोन, कनेक्टिविटी या डिजिटल साक्षरता की कमी वाले लोगों को बाहर कर सकता है।
- सूचना विषमता:** नागरिकों के पास तकनीकी रूप से अधिकार हो सकते हैं लेकिन उन्हें प्रभावी ढंग से प्रयोग करने के लिए जागरूकता या संसाधनों की कमी हो सकती है।
- जवाबदेही अंतराल:** कार्यान्वयन की कई परतें परिणाम खराब होने पर जिम्मेदारी तय करना कठिन बना सकती हैं।
- प्रक्रियावाद (प्रोसीजरलिज्म):** अनुपालन पर अत्यधिक जोर देने से परिणाम-उन्मुख शासन के बजाय "प्रक्रिया-उन्मुख प्रशासन" हो सकता है।

आगे का रास्ता भारत को आवश्यकता है:

- परिणाम-आधारित निगरानी;

- मजबूत स्थानीय सरकारें;
- अंतर-संचालनीय (इंटरऑपरेबल) डिजिटल सिस्टम;
- सामाजिक अंकेक्षण (सोशल ऑडिट);
- नागरिक-केंद्रित शिकायत निवारण;
- अग्रिम पंक्ति के अधिकारियों का क्षमता निर्माण;
- स्वतंत्र मूल्यांकन;
- व्हिसलब्लोअर्स के लिए सुरक्षा;
- गोपनीयता की रक्षा करते हुए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि और डेटा का अधिक उपयोग।

निष्कर्ष सुशासन अंततः नागरिकों और संस्थाओं के बीच विश्वास का संबंध है। जवाबदेही के बिना दक्षता निरंकुश प्रशासन बन सकती है, जबकि प्रशासनिक क्षमता के बिना भागीदारी अप्रभावी निर्णय लेने की स्थिति पैदा कर सकती है। इसलिए टिकाऊ शासन के लिए क्षमता, जवाबदेही, भागीदारी और समावेशिता को एक साथ मजबूत करने की आवश्यकता है।

जीएस पेपर III - आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)

Q3. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक साथ उत्पादकता बढ़ाने वाली तकनीक और नए आर्थिक, सामाजिक तथा शासन संबंधी जोखिमों का स्रोत है। भारत में एआई के व्यापक प्रसार से जुड़े अवसरों और चुनौतियों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

नमूना उत्तर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस व्यापक रूप से उन कम्प्यूटेशनल प्रणालियों को संदर्भित करता है जो मानव संज्ञानात्मक क्षमताओं जैसे पैटर्न पहचान, भविष्यवाणी, भाषा प्रसंस्करण, वर्गीकरण और निर्णय लेने से जुड़े कार्यों को करने में सक्षम हैं। इसका महत्व केवल स्वचालन में नहीं बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में मानव क्षमताओं को बढ़ाने की संभावना में निहित है।

भारत के लिए अवसर

1. उत्पादकता में वृद्धि एआई दोहराव वाले संज्ञानात्मक कार्यों को स्वचालित कर सकता है, आपूर्ति श्रृंखलाओं को अनुकूलित कर सकता है और पूर्वानुमान में सुधार कर सकता है, जिससे संभावित रूप से उत्पादकता बढ़ सकती है।

2. कृषि एआई-सक्षम उपग्रह इमेजरी, सेंसर और मौसम डेटा निम्नलिखित में सहायता कर सकते हैं:

- फसल-स्वास्थ्य निगरानी,
- सिंचाई समय-सारिणी,
- कीट पहचान,
- उपज पूर्वानुमान,
- सटीक कृषि (प्रेसीजन एग्रीकल्चर)।

सरकारी पहल जलवायु-लचीली कृषि के हिस्से के रूप में एआई-, सेंसर- और मौसम-आधारित सिंचाई तथा सलाहकार प्रणालियों को बढ़ावा दे रही हैं।

3. स्वास्थ्य सेवा एआई मेडिकल इमेजरी, बीमारी की जांच, नैदानिक निर्णय सहायता और दवा की खोज में सहायता कर सकता है, विशेष रूप से जहां विशेषज्ञ जनशक्ति सीमित है।

4. शिक्षा अनुकूली शिक्षण प्रणालियां (एडेप्टिव लर्निंग सिस्टम) शैक्षिक सामग्री का वैश्वीकरण कर सकती हैं और सीखने के अंतरालों की पहचान कर सकती हैं।

5. शासन एआई निम्नलिखित में सहायता कर सकता है:

- धोखाधड़ी का पता लगाना,
- आपदा पूर्वानुमान,
- कर अनुपालन,
- सार्वजनिक सेवा का लक्ष्यीकरण,
- दस्तावेज़ प्रसंस्करण,
- बहुभाषी नागरिक सेवाएं।

प्रमुख चिंताएं

- **रोजगार विस्थापन:** स्वचालन नियमित संज्ञानात्मक और दोहराव वाले व्यवसायों को असंगत रूप से प्रभावित कर सकता है। इसलिए चुनौती केवल बेरोजगारी नहीं बल्कि व्यावसायिक परिवर्तन है।
- **एल्गोरिदम पूर्वाग्रह:** एआई सिस्टम डेटा से सीखते हैं। यदि ऐतिहासिक डेटा में सामाजिक पूर्वाग्रह शामिल हैं, तो स्वचालित प्रणालियां उन्हें पुनर्जीवित या बढ़ा सकती हैं।
- **गोपनीयता:** बड़े पैमाने पर एआई के लिए डेटा की भारी मात्रा की आवश्यकता होती है। कमजोर सुरक्षा उपाय निगरानी और अनधिकृत प्रोफाइलिंग के जोखिम पैदा कर सकते हैं।
- **स्पष्टता की कमी (एक्सप्लेनेबिलिटी):** एल्गोरिथम निर्णय से प्रभावित नागरिक को यह समझने में कठिनाई हो सकती है कि वह निर्णय क्यों लिया गया।
- **तकनीकी शक्ति का संकेंद्रण:** उन्नत कंप्यूटिंग अवसंरचना, डेटासेट और फाउंडेशन मॉडल के लिए पर्याप्त पूंजी की आवश्यकता होती है। यह एआई क्षमताओं को कुछ कंपनियों और देशों के बीच केंद्रित कर सकता है।
- **डीपफेक और सूचना अखंडता:** जनरेटिव एआई सिंथेटिक ऑडियो, छवियों और वीडियो बनाने की लागत को कम कर सकता है, जिससे जनविश्वास के लिए चुनौतियां पैदा हो सकती हैं।

आगे का रास्ता भारत को एक जोखिम-आधारित शासन ढांचे की आवश्यकता है जो निम्नलिखित को जोड़ता है:

- डेटा सुरक्षा;
- एल्गोरिथम जवाबदेही;
- मानवीय निगरानी;
- स्वतंत्र अंकेक्षण;

- एआई साक्षरता;
- पुनर्कौशल (रीस्किलिंग);
- जनहित एआई;
- अंतर-संचालनीय सार्वजनिक डिजिटल अवसंरचना;
- भारतीय भाषाओं में एआई के लिए समर्थन;
- भेदभावपूर्ण स्वचालित निर्णयों के खिलाफ सुरक्षा उपाय।

उद्देश्य नवाचार और विनियमन के बीच चयन करना नहीं होना चाहिए। विनियमन स्वयं विश्वसनीय नवाचार को सक्षम करने के लिए डिज़ाइन किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष एआई तभी एक प्रमुख उत्पादकता गुणक बन सकता है जब तकनीकी प्रगति के साथ मानव पूंजी, संस्थागत क्षमता और नैतिक सुरक्षा उपाय शामिल हों। भारत का तुलनात्मक लाभ एआई को केवल श्रम के विकल्प के रूप में मानने के बजाय अपने डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना और बड़े मानव संसाधन आधार के साथ एआई को संयोजित करने में निहित हो सकता है।

जीएस पेपर IV - नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और लोक प्रशासन

Q4. "लोक प्रशासन में प्रौद्योगिकी का बढ़ता उपयोग एक विरोधाभास पैदा करता है: यह निर्णयों को अधिक सुसंगत और कुशल बना सकता है, फिर भी इसके साथ ही निर्णय लेने की प्रक्रिया को मानवीय जिम्मेदारी से दूर कर सकता है।" शामिल नैतिक मुद्दों की चर्चा कीजिए और एक नैतिक लोक सेवक के लिए सुरक्षा उपायों का सुझाव दीजिए।

नमूना उत्तर लोक प्रशासन अंततः व्यक्तियों पर सार्वजनिक शक्ति का प्रयोग करता है। इसलिए केवल दक्षता ही यह निर्धारित नहीं कर सकती कि कोई प्रशासनिक निर्णय नैतिक रूप से वैध है या नहीं। बढ़ते डिजिटलीकरण और एल्गोरिथम-आधारित निर्णय लेने के साथ, नैतिक चुनौती तकनीकी दक्षता को मानवीय गरिमा, जवाबदेही, निष्पक्षता और न्याय के साथ जोड़ना है।

नैतिक मुद्दे

- 1. जवाबदेही** जब कोई एल्गोरिथम गलत निर्णय लेता है, तो जिम्मेदारी प्रोग्रामर, विक्रेता, विभाग और अधिकारी के बीच बिखर सकती है। जवाबदेही के नैतिक सिद्धांत के लिए आवश्यक है कि जिम्मेदारी अंततः पहचान योग्य रहे।
- 2. पारदर्शिता** नागरिकों को अपने अधिकारों को प्रभावित करने वाले निर्णयों को समझने में वैध रुचि होती है। पूरी तरह से अपारदर्शी स्वचालित प्रणाली प्रक्रियात्मक निष्पक्षता को कमजोर कर सकती है।
- 3. पूर्वाग्रह और भेदभाव** एक एल्गोरिथम वस्तुनिष्ठ प्रतीत हो सकता है क्योंकि यह गणितीय गणनाओं का उपयोग करता है, लेकिन पूर्वाग्रह से युक्त प्रशिक्षण डेटा भेदभावपूर्ण परिणाम उत्पन्न कर सकता है। इस प्रकार, तकनीकी तटस्थता अनिवार्य रूप से नैतिक तटस्थता की गारंटी नहीं देती है।
- 4. गोपनीयता** लोक प्रशासन तेजी से संवेदनशील व्यक्तिगत जानकारी को संसाधित करता है। अत्यधिक डेटा संग्रह सूचनात्मक स्वायत्तता के सिद्धांत का उल्लंघन कर सकता है।

5. मानवीय गरिमा राज्य के पास पहुंचने वाला नागरिक केवल एक डेटा बिंदु नहीं है। मानवीय समीक्षा के सार्थक अवसरों के बिना आवेदनों को खारिज करने वाली स्वचालित प्रणालियां गरिमा को कमजोर कर सकती हैं।

6. दक्षता और करुणा के बीच संघर्ष एक स्वचालित कल्याणकारी प्रणाली पर विचार करें जो किसी आवेदन को इसलिए खारिज कर देती है क्योंकि एक विशिष्ट डेटाबेस फ़्रील्ड मौजूदा रिकॉर्ड से मेल नहीं खाता है। तकनीकी रूप से, प्रणाली सही ढंग से काम कर रही हो सकती है, जबकि नैतिक रूप से परिणाम अन्यायपूर्ण हो सकता है यदि बेमेल प्रशासनिक त्रुटि के कारण हुआ हो।

एक सिविल सेवक में आवश्यक नैतिक गुण

- **सत्यनिष्ठा:** अधिकारी को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि व्यक्तिगत या संस्थागत हितों के लिए तकनीकी प्रणालियों में हेरफेर न किया जाए।
- **निष्पक्षता:** एल्गोरिदम और प्रशासनिक निर्णयों को बिना किसी भेदभाव के लागू किया जाना चाहिए।
- **सहानुभूति:** अधिकारी को उन असाधारण परिस्थितियों को पहचानना चाहिए जिन्हें स्वचालित प्रणालियां पर्याप्त रूप से कैचर नहीं कर सकती हैं।
- **वस्तुनिष्ठता:** व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को हस्तक्षेप या समीक्षा का निर्धारण नहीं करना चाहिए।
- **जवाबदेही:** एक अधिकारी को जिम्मेदारी के विकल्प के रूप में "एल्गोरिदम ने फैसला किया" का उपयोग नहीं करना चाहिए।

सुरक्षा उपाय

- उच्च-प्रभाव वाले निर्णयों के लिए ह्यूमन-इन-द-लूप (मानवीय निगरानी) की उपस्थिति।
- आवधिक एल्गोरिथम अंकेक्षण।
- स्पष्टता की आवश्यकताएं (एक्सप्लेनेबिलिटी)।
- शिकायत और अपील तंत्र।
- डेटा न्यूनीकरण (डेटा मिनिमाइजेशन)।
- डिज़ाइन द्वारा गोपनीयता (प्राइवेसी-बाय-डिज़ाइन)।
- सामाजिक समूहों में पूर्वाग्रह परीक्षण।
- संस्थागत जिम्मेदारी का स्पष्ट आवंटन।
- उच्च जोखिम वाले अनुप्रयोगों के लिए स्वतंत्र निगरानी।
- डिजिटल नीतिशास्त्र में सिविल सेवकों का निरंतर प्रशिक्षण।

निष्कर्ष प्रौद्योगिकी को लोक प्रशासन के एक साधन के रूप में समझा जाना चाहिए, न कि सार्वजनिक जिम्मेदारी के प्रतिस्थापन के रूप में। इसलिए नैतिक सिविल सेवक को तकनीकी दक्षता को संवैधानिक नैतिकता, करुणा, सत्यनिष्ठा और जवाबदेही के साथ जोड़ना चाहिए। डिजिटल प्रशासन की अंतिम परीक्षा यह नहीं है कि प्रणाली निर्णय कितनी तेजी से लेती है, बल्कि यह है कि क्या यह राज्य को निष्पक्ष, स्पष्ट और मानवीय निर्णय लेने में सक्षम बनाती है।

समसामयिक मामले - जीएस पेपर III

Q5. भारत के कृषि परिवर्तन के लिए अनाज-केंद्रित उत्पादन से उच्च-उत्पादकता और उच्च-मूल्य वाली फसल विविधीकरण (जिसमें बागवानी भी शामिल है) की ओर बदलाव की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। इस संक्रमण के लिए आर्थिक, पारिस्थितिक और पोषण संबंधी तर्कों का परीक्षण कीजिए। यह सुनिश्चित करने के लिए कौन-सा नीतिगत ढांचा आवश्यक है कि विविधीकरण किसानों को केवल एक प्रकार के उत्पादन जोखिम से दूसरे प्रकार के उत्पादन जोखिम में न धकेले?

नमूना उत्तर भारत की कृषि चुनौती धीरे-धीरे केवल कुल उत्पादन बढ़ाने से आगे बढ़ रही है। इसमें एक साथ उच्च उत्पादकता, बेहतर कृषि आय, कुशल संसाधन उपयोग, पोषण सुरक्षा और जलवायु लचीलापन हासिल करना तेजी से शामिल हो रहा है।

हाल के सरकारी आकलन बागवानी और अन्य उच्च मूल्य वाली कृषि गतिविधियों की बढ़ती भूमिका को दर्शाते हैं। पिछले दशक में बागवानी उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है, जबकि सरकार ने कृषि-जलवायु परिस्थितियों, पानी की उपलब्धता और बाजार के अवसरों के अनुसार क्षेत्र-विशिष्ट विविधीकरण को बढ़ावा दिया है।

विविधीकरण क्यों आवश्यक है

1. उच्च मूल्य सृजन फल, सब्जियां, मसाले, फूल और रोपण फसलें कुछ पारंपरिक अनाज प्रणालियों की तुलना में प्रति इकाई भूमि अधिक मूल्य उत्पन्न कर सकती हैं, विशेष रूप से जहां उपयुक्त कृषि-जलवायु और बाजार की स्थितियां मौजूद हैं।

2. जल सुरक्षा कई अनाज उगाने वाले क्षेत्र भूजल तनाव का सामना कर रहे हैं। एक आईसीएआर (ICAR) मूल्यांकन ने कई भूजल-विहीन राज्यों में मौजूदा फसल पैटर्न और पानी की उपलब्धता के बीच बेमेल की पहचान की है। इसलिए यह समान फसल प्रतिस्थापन के बजाय स्थान-विशिष्ट विविधीकरण का समर्थन करता है।

3. पोषण सुरक्षा फलों, सब्जियों, दालों और अन्य पोषक तत्वों से भरपूर फसलों की ओर विविधीकरण पोषण-संवेदनशील कृषि के साथ कैलोरी-उन्मुख खाद्य सुरक्षा को पूरा कर सकता है।

4. जलवायु लचीलापन एक विविध कृषि प्रणाली एकल फसल पर निर्भरता को कम कर सकती है और संभावित रूप से विभिन्न जलवायु संवेदनशीलता वाली फसलों में उत्पादन जोखिमों को वितरित कर सकती है।

5. रोजगार और मूल्य संवर्धन बागवानी का निम्नलिखित के साथ मजबूत संबंध है:

- खाद्य प्रसंस्करण,
- कोल्ड चेन,
- पैकेजिंग,
- लॉजिस्टिक्स,
- खुदरा व्यापार,
- निर्यात।

यह खेत के स्तर से परे अवसर पैदा करता है।

लेकिन विविधीकरण स्वयं नए जोखिम पैदा करता है

- **बाजार जोखिम:** कुछ क्षेत्रों में अपेक्षाकृत पूर्वानुमानित खरीद तंत्र द्वारा समर्थित अनाजों के विपरीत, बागवानी वस्तुओं में काफी मूल्य अस्थिरता का अनुभव हो सकता है।
- **शीघ्र खराब होना (पेरिशेबिलिटी):** फलों और सब्जियों को कोल्ड स्टोरेज, प्रसंस्करण और कुशल लॉजिस्टिक्स की आवश्यकता होती है।
- **गुणवत्ता और निर्यात मानक:** वैश्विक बाजार अवशेषों, पता लगाने की क्षमता (ट्रेसेबिलिटी), पैकेजिंग और फाइटोवैधानिक आवश्यकताओं से संबंधित कड़े मानक लागू करते हैं।
- **जल-गहन बागवानी:** विविधीकरण स्वचालित रूप से जल संरक्षण का पर्याय नहीं है। कुछ बागवानी फसलें स्वयं फसल और उत्पादन विधि के आधार पर जल-गहन हो सकती हैं।
- **छोटे धारकों की बाधाएं:** खंडित जोत के साथ, किसानों में सौदेबाजी की शक्ति, भंडारण सुविधाओं और संगठित बाजारों तक पहुंच की कमी हो सकती है।

आवश्यक नीतिगत ढांचा

1. कृषि-जलवायु योजना फसल का चुनाव केवल अल्पकालिक कीमतों के बजाय निम्नलिखित पर आधारित होना चाहिए: मृदा + जल + जलवायु + बाजार + किसान की क्षमता

2. बाजार अवसंरचना निम्नलिखित का विस्तार:

- कोल्ड चेन,
- ग्रेडिंग,
- गोदाम,
- प्रसंस्करण इकाइयां,
- किसान-उत्पादक संगठन (एफपीओ),
- डिजिटल बाजार संपर्क।

3. जोखिम प्रबंधन फसल बीमा और मौसम-आधारित बीमा को विविध फसलों के लिए बेहतर कवरेज की आवश्यकता है।

4. जल-उपयोग दक्षता ड्रिप सिंचाई, फर्टिगेशन, वर्षा जल संचयन और वैज्ञानिक सिंचाई समय-सारिणी को विविधीकरण के साथ होना चाहिए। सरकारी कार्यक्रम पहले से ही सूक्ष्म सिंचाई और स्थान-विशिष्ट संसाधन प्रबंधन को बढ़ावा दे रहे हैं।

5. मूल्य-श्रृंखला दृष्टिकोण किसान को केवल फसल बदलने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए; संपूर्ण उत्पादन-से-प्रसंस्करण-से-बाजार श्रृंखला को एक साथ विकसित किया जाना चाहिए।

6. अनुसंधान और विस्तार उन्नत किस्में, जलवायु-लचीली किस्में, कटाई के बाद की तकनीक और डिजिटल सलाह आवश्यक हैं।

निष्कर्ष उद्देश्य "अपने आप में विविधीकरण" नहीं, बल्कि उत्पादक, लाभदायक और संसाधन-कुशल विविधीकरण होना चाहिए। इसलिए भारत के कृषि परिवर्तन को एक संकीर्ण उत्पादन-केंद्रित दृष्टिकोण से एक मूल्य-श्रृंखला, जल-संवेदनशील और जलवायु-लचीली कृषि रणनीति की ओर बढ़ना चाहिए जिसमें किसानों के पास विविधीकरण के लिए अवसर और संस्थागत क्षमता दोनों हों।

वर्तमान नीतिगत दिशा पहले से ही इस बदलाव को दर्शाती है: आईसीएआर (ICAR) ने स्थान-विशिष्ट विकल्पों की पहचान की है और दालों, तिलहनों, मोटे अनाजों, बागवानी फसलों, सूक्ष्म सिंचाई और प्रौद्योगिकी-सक्षम संसाधन प्रबंधन को बढ़ावा दे रहा है।

